Ground report 15

स्थानीय आजीविका: आत्म निर्वाह और गरिमा का आधार

"वापसी" गूँज द्वारा बड़े पैमाने पर आजीविका उत्पन्न करने की एक जाँची परखी योजना है जो लोगो को अपने ज्ञान और संसाधनों का मूल्यांकन करते हुए स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम बनाती है। क्षेत्र के अनुरूप अपनी कुशलता, बुद्धिमत्ता और आकांक्षाओं का मेल कर, 'वापसी' लोगों को अपने जीवन को बेहतर बनाने का अवसर प्रदान करती है। लेन-देन और व्यक्तिगत-नेतृत्व वाले होने के बजाय, यह लोगो को अपने समुदाय में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। कोविड के दौरान भी हमने भारत के विभिन्न स्थानों में आजीविका संबंधी कार्य जारी रखा, बहुत से उपेक्षित लोगों तक पहुंचे, विभिन्न आजीविका विकल्पों के लिए जमीनी स्तर पर नए प्रयोग प्रारंभ किए और इस कार्य के स्तर को बढ़ाकर उच्च स्तर पर करने की व्यवस्था की। यह एक व्यापक प्रयास है जिसे कई स्तरों पर संसाधनों और विशेषज्ञता की आवश्यकता होगी। अगर यह आपको सवाल पूछने के तक लिए भी प्रोत्साहित करता है, तो आप पहले से ही इस प्रक्रिया का एक हिस्सा हैं...लेकिन, यह सिर्फ शुरुआत है..अब जरूरत एक बदलाव की है... विचारक से कर्ता की ओर...

राहत कोविद:

- 26 राज्य / केंद्र शासित प्रदेश
- 3.3 मिलियन किलो से अधिक राशन और अन्य आवश्यक सामग्री
- 1,70,000+ किलो ताजा सब्जियां और फल
- 8,0,000+ फेस मास्क और कपडे से बने सैनिटरी पैड
- 2,500+ डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) परियोजनाएं

'वापसी' पहल के तहत हमारे काम की एक झलक

मछली पालन; एक पहल...

जबकि कई लोगों ने इस बारे में सोचा कि क्या स्थानीय ज्ञान और संसाधन गांवों में आजीविका उत्पादन के आत्मनिर्भर मॉडल बनाने में सक्षम हो सकते हैं, हमारी टीमों इसपर काम किया। बोकारो जिले के गोमिया क्षेत्र में लॉकडाउन के बाद आए लोगों के लिए आजीविका एक चुनौती बन गयी। उस समय गूँज ने जन सहयोग केन्द्र हजारीबाग के साथ साझेदारी की और लोगों को मत्स्य पालन करने के लिए प्रेरित किया तथा लोगों के साथ मिलकर ग्राम तालाब में इसकी स्थापना की। इसे सफल बनाने के लिए प्रत्येक समूह को मछली के अंडे दिए गए। एक प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें स्थानीय विशेषज्ञों

द्वारा मछली पालन के पारंपरिक तरीकों के बारे में अपने ज्ञान का आदान-प्रदान किया गया। इसके अलावा, गूँज की टीम स्थानीय लोगों के साथ वनस्पति कृषि स्थापित करने का काम कर रही है ताकि उनके लिए आजीविका के वैकल्पिक साधन सम्भव हो सकें।

<u>चाय के पैकेट बनाना और महक और स्वाद के साथ तालमेल</u>

जलपाईगुड़ी जिले के केरनीपारा क्षेत्र में 'वापसी' के अंतर्गत, लोगो की मदद करने हेतु गूँज ने उनसे चायपत्ती के पैकेट खरीदने की शुरुआत की। यह समुह जनजातीय समुदायों से है और पहले स्थानीय बिजली विभाग के साथ काम करता था। हालांकि डिजीटल मीटर बोर्ड के आगमन के बाद उन्हें रोजगार के अन्य विकल्प खोजने के लिए विवश होना पड़ा। जैसा कि उत्तर बंगाल का डुआर्स क्षेत्र चाय की पत्तियों के उत्तम मिश्रण के लिए प्रसिद्ध है, हमारी टीम के सदस्यों के प्रोत्साहन के साथ, उन्होंने चाय के पैकेट बनाने का काम फिर से शुरू करने का फैसला किया। जल्द ही, चायपत्ती के पैकेट खरीदने के लिए आदेश दे दिया गया, जिसे गूँज राहत किट में शामिल किया गया।

<u>मुर्गी पालन के साथ आशाओं को पंख देने की एक पहल</u>

जलपाईगुड़ी के नारायणजोत गाँव में हाल ही में देखा गया कि कैसे एक सामुदायिक पोल्ट्री फार्म के निर्माण के लिए परिवारों के सामूहिक प्रयासों और संकल्प ने कोविड के कठिन समय के बावजूद स्थिर आजीविका के लिए उज्ज्वल उम्मीद की किरण प्रदान की। गूँज द्वारा 'वापसी' के अंतर्गत एक महीने तक चूज़ों की देखभाल, खान-पान, व दवाइयों की मदद ने इस कार्य को मजबूती दी, और स्थानीय समुदाय में से एक परिवार ने इस फार्म को शुरू करने के लिए अपनी जमीन तक निःशुल्क दी। गूँज टीम के प्रोत्साहन से सभी लोगों ने इस कार्य को शुरू करने के लिए अपने स्तर पर सहायता राशि दी जिससे बांस व अन्य समान खरीदा जा सके। सभी की मेहनत सफल हुई और अब वह चूज़ों की अपनी पहली बिक्री कर चुके हैं जिससे वह बहुत खुश हैं।

<u>हस्तशिल्प के साथ आत्म निर्वाह</u>

ओडिशा के केंद्रपारा जिले के घरभन्गा जेनासाही गांव ने हाल ही में देखा कि कैसे सामुदायिक सफाई और आजीविका परियोजनाओं के प्रति निवासी परिवारों के संयुक्त प्रयासों से स्थानीय लोगों को एक स्थायी आजीविका विकल्प भी मिल सकता है। ग्रामीणों को पानी से संबंधित गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था और आय का कोई साधन नहीं होने के कारण युवाओं को आजीविका अर्जित करने हेतु विवश हो कर बाहर जाना पड़ता था। गूँज के 'वापसी' पहल के अंतर्गत स्थानीय समुदाय ने बांस से हस्तशिल्प वस्तुओं को बनाने की शुरुआत करने का निर्णय लिया और अब वह लोग सिलाई, कालीन बुनाई जैसे अन्य आजीविका के विकल्प भी चुन चुके हैं। और उनसे खरीदा हुआ समान गूँज की

सहायता किटों में शामिल किया जाएगा। तैयार सामान (मुख्य रूप से बांस की टोकरी) गूंज द्वारा खरीदते ही उसे गूँज की राहत किट में जोड़ दिया जाएगा।

<u>पेट के रास्ते... दिल तक - कैटरिंग आजीविका के रूप में</u>

पांच महिलाओं के एक समूह द्वारा संचालित केरल के मलप्पुरम जिले के करुलाय में जानकीया होटल (जिसका अर्थ 'लोकप्रिय होटल' है) को क्वारंटाइन के दौरान लोगों को जेब पर भारी न पड़ने वाला और स्थानीय प्रशासन की मदद से कुछ चिन्हित लोगो को मुफ्त भोजन देने के विचार के साथ शुरू किया गया था। काम में सफलता मिलती देख, महिलाओं ने होम डिलीवरी सेवाओं के साथ एक नया रेस्तरां स्थापित करने का फैसला किया। हालाँकि, उनके लाभ का एक बड़ा हिस्सा बर्तन के किराए का भुगतान करने में जा रहा था तो उन्होंने सहायता के लिए गूँज से संपर्क किया। अब जब उनके सिर से बर्तन के किराए की चिंता दूर हो गयी है, वे अधिक बचत और पुन: निवेश के लिए उत्सुक हैं।

<u>मूंगफली खरीद के साथ गुणवत्ता सुनिश्चित करना</u>

ओडिशा के बालासोर और मयूरभंज जिलों में ग्रामीणों के सीमांत और छोटे किसान होने के कारण उन्हें महामारी की शुरुआत के बाद से मूंगफली की बिक्री में परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। गूँज ने अपने वापसी अभियान के अंतर्गत परिवारों की सहायता करने के लिए मूंगफली की खरीद की जिसे गूँज सहायता किट मे शामिल किया। इस क्षेत्र में कोविड के दौरान राहत कार्य करने गई गूँज टीम कैमिकल मुक्त और बेहतर गुणवत्ता वाली मूंगफली का उत्पादन देख आश्चर्यचकित थी परंतु इतनी अच्छी गुणवत्ता वाली मूँगफली को किसानो को बहुत कम कीमतों पर बेचना पड़ रहा था जो कि दुखद था. इसीलिए गूँज ने अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर स्थानीय लोगों से कच्ची और ताजा मूंगफली अच्छी कीमत पर खरीदने का निर्णय लिया ताकि उनके लिए स्थायी आजीविका विकल्प तैयार किया जा सके।

<u>जीवन में बदलाव ला रही सामुदायिक खेती</u>

पलक्कड़ जिले के पलसैना गांव में सामुदायिक कृषि परियोजनाएं स्थानीय महिलाओं के जीवन और भविष्य को बदलती रही हैं। सिलाई की दुकानों में अपनी नौकरी गंवाने और विभिन्न स्थानों पर दैनिक श्रमिकों के रूप में काम करने की मशक्कत के बीच जब कोविड ने उन्हें पैसे कमाने के सभी अवसरों से वंचित कर दिया तो वे काफी निराश हो गयी, परंतु गूँज द्वारा थोड़ी प्रेरणा और प्रोत्साहन के साथ उन्होंने वापस बंजर ज़मीन के टुकड़ो की ओर रुख किया। आज वे महिलाएं बैंगन, भिंडी, टमाटर, ककड़ी आदि जैसी सब्जियों की जैविक पैदावार कर रहीं हैं, जो पूरे गांव में सभी की पसंदीदा बन गई हैं। हर सुबह लोग ताजा पालक और बीन्स लेने आते हैं जिसका अलग ही आनंद है। पांच महिलाओं में से एक

थन्कम्मा जी का कहना है, "कभी कभी हमे मुश्किल होती है सब्जियों को बेचने में लेकिन ज्यादातर दिन हम अधिक मांग के कारण लोगों की जरूरत पूरी भी नहीं कर पाते।"

<u>कार्य क्षेत्र से जानकारी:</u>

कोविद के दौरान, गूंज ने अपने बहु - हितधारक नेटवर्क को बढ़ाया जिससे कि 26 राज्यों में सबसे अधिक उपेक्षित समुदाय एवं परिवारों तक 3.3 मिलियन किलो राशन और राहत किट को स्थानीय एवं अनुकूलित सहायता के साथ पहुँचा सके।

हमारी स्थानीय टीम भी तत्काल राहत प्रदान करने के लिए चक्रवात अम्फ़ान प्रभावित वेस्ट बंगाल और ओडिशा, चक्रवात निसारगा प्रभावित महाराष्ट्र और असम में दीर्घकालीन पुनर्वास प्रदान करने के लिए काम कर रही है।

लाखो लोगों की जिंदगी इनसे प्रभावित हुई है और महामारी की तेजी से बदलती प्रकृति और बारहमासी प्राकृतिक आपदाओं के हमले को देखते हुए हम लगातार अपनी कार्यप्रणाली में बदलाव व नवीनीकरण करने का प्रयास कर रहे हैं।

तत्काल राहत सहायता

- 33,80,000 + किलोग्राम राशन और अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाई गयी.
- 2,30,000+ परिवारों तक पहुँच
- 1,59,000+ तैयार भोजन चैनलाइज़ किया गया

भागीदारी

- 26 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो में 400 से अधिक सहभागी संस्थाओ के साथ काम।
- उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।

स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

- 5,00,000+ फेस मास्क
- 3,61,000+ क्लॉथ सैनिटरी पैड
- 29,000+ अंडरगारमेंट्स

- 10,45,000+ अन्य आवश्यक वस्तुएं

कुल डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) परियोजनाएं 1,800+

- 1100+ सब्जी बागान लगाए गए
- जल संसाधन का कुल क्षेत्र जिसे साफ / मरम्मत / बनाया गया

  -तालाब क्षेत्र 2,37,000+ वर्ग मी

  -बैक वाटर 32,000+ वर्ग मी

  -नहर 88,000+ वर्ग मी

- **अब तक समर्थित 26 सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से 1,99,000+ भोजन**

- **किसानो से सीधे तौर पर 1,74,500 किलो से अधिक फल और सब्जिया खरीदी गयी।**

हमारा साथ दें:

- थोक रूप में सामग्री सहयोग- https://bit.ly/2yR000h
- राशि सहयोग के लिये- goonj.org/donate
- गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैंपेन शुरू करने के लिए हमे jibin@goonj.org पर मेल करे।

पिछली डिग्निटी डायरी:

- 1 अगस्त: बेहतर आपदा प्रतिक्रिया के लिए तत्काल आवश्यकता
- 16 अगस्त: आपदाओं में गूँज : आखिरी व्यक्ति तक पहुँचने का प्रयास

  इन रिपोर्ट्स को पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें: http://bit.ly/2K1JH3e

योगदान के तीन अच्छे सुझाव:

·   घर पर एक गूंज की गुल्लक शुरू करें। चाहे आप किसी भी मुकाम पर हों... लोगो की ज़िन्दगी में योगदान देने को एक आदत के रूप में गले लगाने का सबसे सरल तरीका है ..http://goonj.org/goonj-ki-gullak/

·   नया जीवन शुरू करने वाले एक दम्पति के लिए एक विवाह किट तैयार करें... हम आपसे वादा करते हैं कि नए जीवन की शुरुआत के लिए प्यार से तैयार किया गया एक किट आपको खुशी का अनुभव देगा।

·   गूंज के साथ संग्रह शिविर करने के लिए साइन अप करें- अपनी कॉलोनी में रीसाइक्लिंग और पुनरुपयोग के चैंपियन बनें ..अपनी अतिरिक्त और उपयोग में न आने वाली सामग्री को जुटाने के लिए लोगों को एकजुट और प्रेरित करें।

https://goonj.org/collection-camps/

संपर्क करे :

मुख्यालय : J-93, सरिता विहार, नई दिल्ली - 76

011-26972351/41401216